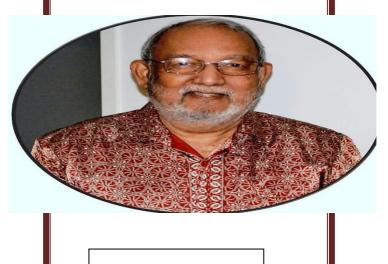


Dr Ram Lakhan Prasad



An Essay

hjklzxcv

bnmqwertyuiopasdfghjkl

zycyhnmawertynionaedfo

हिंदी कविता का विषय

अपने जीवन के आधे समय से हम कविता करते और पढते आ रहें हैं इस लिए आज हमने सोचा की क्यों न हम कविता के विषय को ले कर अपना विचार प्रस्तुत करूँ । वैसे तो हम ने हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कविता ज्ञान से परिचित हूँ लेकिन हमारा आज का विषय ख़ास कर के हिंदी कविता से सम्बन्ध रखेगा । हालांकिं मेरी कुछ कुछ कथन शायद दोनों भाषाओं से तालुक रखती है।

कविता की सृष्टि किस प्रकार होती है? इस सवाल का सही जवाब एक कवि के अंदर छिपा होता है और अगर उस को खुरेचो तो आहिस्ते आहिस्ते इस का मतलब सामने आजायेगा।

जब हमारे ह्रदय में एक अजीब सी बेचैनी या विशेष स्फूर्ति होती है तो हम अनायास ही कुछ ख़ास कह या लिख देते हैं | हम को सुनने और पढ़ने वाले या तो हमको मतवाला या कवि समझने लगते हैं | इस लिए मैं कहता हूँ की कविता मतवालेपन की बहक होती है | अक्सर उस बहक में न तो कोई विषय हो सकता है और न कोई उसका अर्थ हो सकता है पर गौर से सुनने और गुनने के बाद उस में हम विषय भी देख सकते हैं और उसका अर्थ भी निकाल सकते हैं।

अगर वास्तव में ऐसा नहीं है तो हम किव के हृदय में जो प्रसव वेदना होती है उस पर नज़र दौड़ते हैं तथा उसके स्पष्ट कारण ढूंढते हैं, नियम देखते हैं। इस लिए हर एक किव की बहक यधिप संसार की आम बोली वाणी से भिन्न है फिरभी वह निरर्थक नहीं होती है। उस में अर्थ भी होते है और विषय भी रहते हैं।

युग युग के संस्कार, प्राण प्राण के सुख दुःख और हर एक व्यक्ति के आचार विचार तथा जड़ प्रकृति की गतियां अर्थात संसार का कण कण अपनी बातें किव के ह्रदय से निकलता जाता है और वह किवता बन जाता है । यही तो हमारे किवता के बीज हैं । तथा ज्ञान जैसी पानी पा कर वे किवता के रूप में प्रस्फुटित हो उठते हैं । हम सब इंसान में एक क्रम होता है, एक गति होती है और एक नियम होता है जो एक किव की बहक को पागलों की बहक से पृथक करती है ।

कुछ लोगों का कथन है कि ज्ञान कविता का विषय नहीं है पर मेरा अनुभव यह जाहिर करता है कि ज्ञान और भाव दोनों कविता के सही विषय होते हैं | प्रेम, उत्साह, आस्चर्य, करुणा, ईर्षा, घृणाः, आनंद व्यथा, शांति-अशांति आदि भावनाओं कि व्यंजना के लिए ही आदि काल से कवियों के ह्रदय से निकलते आये हैं। उन में जब कुछ ज्ञान का प्रसार हो जाता है तो वह सोने में सुहागा का काम करने लगता है।

हाँ मैं इतना जरूर कहूँगा कि जो ज्ञान की बात है उस का प्रचार हो जाने पर उसका उद्देश्य सफल हो कर समाप्त हो जाता है किन्तु हमारे हृदय की भावना वाली बात प्रचार के द्वारा कभी पुरानी नहीं होती | जहाँ ज्ञान की बात को एक बार जान लेने के पश्चात फिर जानने की आवश्यकता नहीं रह जाती और उन को हम समय आने पर पुनः अपने काम में लाने की कोशिश करते रहते हैं लेकिन भावों की बात का बारम्बार अनुभव कर के भी श्रान्ति बोध नहीं होता है और हम संतुष्ट नहीं होते हैं।

यह तो हर एक मानव की परंपरा है। इस लिए यदि कोई भी किव अपनी किसी वस्तु को चिरकाल पर्यन्त किसी भी मानव के पास उज्जवल तथा नवीन भावों में अमर कर के रखना चाहता है तो उसे उन भावों की बातों का ही आश्रय लेना पड़ता है। शायद इसी लिए हम को बार बार यह कहना पड़ता है की किवता का प्रधान अवलम्बन सिर्फ ज्ञान का विषय नहीं होता है पर उस में भाव के विषय अनमोल रहते हैं।

लेकिन हम यह हरगिज़ नहीं कहते हैं कि कविता को हम सीमित कर देना चाहते हैं क्यूंकि कविता में इतना स्वतंत्रता है कि उस की कोई थाह ही नहीं है। हम उस को जिधर चाहें उधर मोड़ सकतें हैं। एक युग था जब कि वेदों का ज्ञान भी कविता में कहा गया था या अंकगणित, व्याकरण आदि शास्त्रों के सूत्र भी कविता में लिखे गए थे। आज भी यह तमाशा हमको देखने को मिलता है कि कुछ आधुनिक कवि इतिहास, विज्ञान और भूगोल तक को कविता में लिखने का उद्योग करते हैं।

संछिप्त रूप से कहा जाय तो ज्ञान का प्रचार किया जाता है और भावनाओं का संचार होता है यही गुणी जनो के कथन हैं और इन में पर्याप्त सच्चाई है। जो ज्ञान भावना के प्राणो से अभिभूत होकर विश्व के लोगों के हृदय में अभिसार करता है वह अमर हो जाता है। जो लोग भूगोल, इतिहास या गणित जैसी विषय को छंदों में बाँध कर उसे भी कविता कहना चाहते हैं उनको हम आधुनिक कवि का पदवी तो दे ही सकते हैं।

पर पद-रचना करना एक बात है और कविता करना दूसरी है । जहाँ पद-रचना का विषय कुछ भी को सकता है वहीँ कविता का विषय तो मानव-प्राणों में भावों का संचार करना हो सकता है । अभी तक हम ने कविता और कवियों के बारे में जो भी कहा है वो सब मेरे ही अनुभव हैं और अगर पाठक हमारे कथन से सहमत नहीं हैं तो वो उनकी स्वतंत्रता है । इसी लिए शायद किसी कवि ने हमारे सामने इस पंक्ति को लिख रखा है "दिन फेर पिता वर दे सविता, कर दे कविता कवि शंकर को"।

हमारे कई कवियों ने राम, कृष्ण आदि महापुरषों और झाँसी की रानी, पद्मिनी, शिवाजी तथा महाराणा प्रताप जैसे इतिहासिक व्यक्तियों को ले कर कवितायेँ लिखी है पर वे भी कुछ ज्ञान प्रचार करने के उद्देश्य से और ज्यादा भक्ति, प्रेम, देश प्रेम, राष्ट्रीयता आदि भावनाओं का ह्रदय में संचार करने के लिए। कवि जिस प्रकार एक फूल को देख कर प्रभावित होता है तो उसे सुन्दर और प्रिये समझ कर उस पर आसक्त होता है तथा उसकी गीत गाता है । उसी तरह महान आत्माओं और सुन्दर वस्तुओं के सौंदर्य से भी वह प्रभावित होता है। फिर उनके विषय में जो वह अनुभव करता है वही अनुभव वह दूसरों को भी करना चाहता है।

प्रत्येक भाषा का इतिहास एक ही बात कहता है कि गद्य के पहले पद्य का विकाश हुआ | हमारे हिंदी के प्राचीन पुस्तकें सभी पद्य में हैं और इन रचनाओं को देख कर यह कहा जा सकता है कि हिंदी का कविता -साहित्य प्रारम्भ से ही काफी उन्नत रहा है |

यह बात सत्य है कि साहित्य में युग की छाप रहती है अथवा यूँ कहिये कि साहित्ये युग की तस्वीर है | इतिहास घटनाओं का लेख दे सकता है , वह ज़माने का शरीर आप को दिखा सकता है, किन्तु काव्य में आप ज़माने का हृदय पाएंगे | हमारे उन पूर्वजों को

जिन्हें संसार से बिदा हुए शताब्दियाँ बीत गयी, आज भी हम अपने बीच में बैठे पाते हैं। हम उन के शरीर को चाहे न देख पा रहे हों, किन्तु उनका ह्रदय आज भी हम से बातें कर रह। है और हम उनकी भावनाओं को समझ रहें हैं। यह भी जान रहें हैं कि किस युग में हमारा देश वीर था, किस युग में वह भक्ति के ध|रा में बह गया था, किस युग में वह विलाश का बंदी हो गया, किस युग में वह विलाश के बंधन तोड़ने को आकुल हो उठा हो तथा किस युग में उसने अपने अंदर विश्व के आत्मा को पाया।

संछेप में यही कहा जा सकता है कि हमारी हिंदी कविता की ये ही मुख्य धारायें रही हैं:

- १) वीरता-प्रदर्शक काव्य धारा
- २) भक्ति-रस पूर्ण काव्य धारा
- ३) श्रृंगार-रस पूर्ण काव्य धारा
- ४) राष्ट्रिय काव्य धारा
- ५) छायावादी काव्य धारा Imagery
- ६) हृदयवादी काव्य धारा

प्रथम तीन प्रकार की रचनाये प्राचीन युग में होती थी पर आज भी कुछ कवि उन धाराओं पर अड़े हैं । आजकल अक्सर इसी युग के रचनाएँ हमारे सामने आती हैं जिनको हम आधुनिक कविता का नाम देते हैं । हमारे सभी कविताओं में पाठक दोनों युगों के कविताओं का सिमश्रण देख सकते हैं । मेरी सभी कवितायेँ चाहे वो भावना से भरी हैं या फिर ज्ञान देने वाली हैं सभी फ्री-एबूक्स पर छपी हैं । (www.free-ebooks.com).

प्राचीन और नूतन के मुकाबले में रख कर हम किसी एक को अपमानित नहीं करना चाहता | साहित्य में प्रत्येक रस की और सभी प्रकार की भावनाओं का समावेश होना चाहिये | वीर गाथाओं के रचियता चंदबरदाई से लेकर भूषण तक ने हमारे राष्ट्र की प्राणो को बल देने का एक अमर खजाना भर रखा है | हमें दुःख केवल इस बात की है कि उसकी भाषा बहुत पीछे रह गयी है और उसकी आत्मा के पास अब हमें पहुंचना कठिन हो गया है। किन्तु यह सम्पति खो देने के योग्य नहीं है। उनकी भावनाओं को आज भी राष्ट्र को आवश्यकता है। हमारी सोयी हुयी वीरता फिर जाग उठे यह वांछनीय है।

इसी प्रकार के रचनायें जिन में भिक्त ने प्राणो की और आत्मा की बात कही है वो युग युग तक राष्ट्र-हृदयों में लिखी रहेंगी | वीर-गाथा काल की रचनायें एक विशेष देश की घटनाओं से सम्बन्ध रखने के कारण संभव हैं की संसार के अन्य भागों में आदर न पा सकें, किन्तु भिक्त-काल की रचनायें तो सारे संसार की सम्पति हैं।

यह तुलसी, कबीर, रहीम और मीरा आदि भक्ति-रस में दीवाने कवि आज भी विश्व को निमंत्रण दे रहें हैं कि जो सुधा तुम्हें चाहिये वो हमारे पास है। आवो और उसका पान कर के या पी कर आनंद से नाच उठो।

सच्च पूछा जाए तो आजकल छायावाद की जो गंगा बहती है वह भक्ति के महादेव की जटाओं से ही प्रवाहित हुयी हैं।

सिर्फ एक ही धारा ऐसी है जिसके विषय में हमें शिकायत है और वह है

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below

